





---

रामाद्यै जननं कुमारगमनं यज्ञप्रतीपालनं  
शापाद्बुधरक्षं धनुर्विद्वलनं सीताङ्गनोद्ग्राहणम् ।  
लङ्काया दहनं समुद्रतरणं सौमित्रिसम्मोहनं  
रक्षः संहरणं स्वराज्यभवनं यैतद्धि रामायणम् ॥  
एति श्लोकोक्ति रामायणं (२) सम्पूर्णम् ॥

From Ramakarnamritam verse 53 of chaturtha AshvAsaH

---

.. ekashloki rAmAyaNam 2 ..

Searchable pdf was typeset using generateactualtext feature of Xe<sub>La</sub>TeX 0.99996

on October 6, 2017

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

